लोबिया

लोबिया की खेती चारे व दाने के लिए की जाती है। प्रदेष के पष्चिमी जनपदों में यह बहुत लोकप्रिय है।

भूमि की तैयारीः

दोमट भूमि उपयुक्त होती है। खेत सममतल तथा उचित जल निकास वाला होना चाहिए एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करके दो जुताइंया देषी हल अथवा कल्टीवेयर से करने चाहिए।

बुवाई का समय एवं बीज दरः

लोबिया की बुवाई वर्षा प्रारम्भ होने पर जुलाई में करें।

मुख्य प्रजातियां बीज दर एवं उपजः

3.प्रजाति	बीज दर	तैयार होने की अवधि	उपज (कु./हे.)
टा–5269	20	50–60	50–60 (फलियां)
टा–2	40	60–65	300–325 (हरा, चारा)
यू.पी.सी.–5287	–	–	–

बीजपचारः

बुवाई के पूर्व बीज को 2.50 ग्राम थीरम से प्रति कि.ग्रा. की दर से शोधित करने के बाद लोबिया को विषिष्ट राइजोबियम कल्चर से अरहर की फसल के लिए दी गयी विधि के अनुसार उपचारित करके बोना चाहिए।

बुवाईः

दाना व हरी फलियों के लिए बुवाई पंक्तियों में करनी चाहिए। दाने वाली प्रजाति लोबिया टा–2 की बुवाई पंक्तियों में 45–50 से.मी. तथा 5269 लोबिया की प्रजाति की बुवाई फलियों के लिए 50 से.मी. की दूरी पर करनी चाहिए।

खादः

नत्रजन 10–15 कि.ग्रा. तथा फास्फोरस 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के पहले प्रयोग करना चाहिए।

सिंचाई :

सूखे की अवस्था में एक या दो सिंचाई अवष्य करें।

निकाई–गुड़ाई :

बुवाई के 20–25 दिन बाद एक निकाई यदि खरपतवार हो, तो करनी चाहिए।

फसल सुरक्षाः

1. माहूं कीटः यह कीट झुण्डों में पौध पर चिपका रहता है तथा पत्तियों, फूलों एवं फलियों से रस चूसकर फसल हो हानि पहुंचाता है।

उपचारः इसकी रोकथाम हेतु निन्म में से किसी रसायन का छिड़काव करना चाहिए।

1. इन्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति हेक्टर या
2. डाइमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हेक्टर।

सूत्रकृमिः सूत्रकृमि की रोकथाम के लिये ज्वार की मिश्रित खेती करें।